Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. II, Issue No. II, October - 2011, ISSN 2230-7540

सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा और स्त्री शिक्षा की भूमिका

Priya Ranjan*

Research Scholar, Sociology, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur

सारांशः- व्यक्ति स्वभाव से ही एक गतिशीलप्राणी है। अतः मानव समाज कभी भी स्थिर नही रहता उसमें सदैव परिवर्तन हुआ करता है। परिवर्तन संसार का नियम है। परिवर्तन किसी भी वस्तु, विषय, विचार, व्यवहार अथवा आदत में समय के अन्तराल से उत्पन्न हुई भिन्नता को कहते है। परिवर्तन एक बहुत बड़ी अवधारणा है और यह जैविक, भौतिक तथा सामाजिक तीनो जगत में पाई जाती है किन्तु जब परिवर्तन शब्द के पहले सामाजिक शब्द जोड़कर उसे सामाजिक परिवर्तन बना दिया जाता है तो निश्चित ही उसका अर्थ सीमित हो जाता है परिवहन निश्चित है क्योकि यह प्रकृति का नियम है। संसार में कोई भी पदार्थ नही जो स्थिर रहता है उसमें कुछ न कुछ परिवर्तन सदैव होता रहता है। स्थिर समाज की कल्पना करना आज के युग मे संभव नहीं है। समाज में सामंजस्य स्थापित करने के लिए परिवर्तन आवश्यक है। मैकाईवर एवं पेज का कहना है कि समाज परिवर्तनशील तथा गत्यात्मक दोनों है। वास्तव में समाज से संबंधित विभिन्न पहलुओं में होने वाले परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहते है। सामाजिक परिवर्तन एक स्वभाविक प्रक्रिया है यदि हम समाज में सामंजस्य और निरंतरता को बनाये रखना चाहते है तो हमें यथा स्थिति अपने व्यवहार को परिवर्तनशील बनाना ही होगा। यदि ऐसा न होता तो मानव समाज की इतनी प्रगति संभव नहीं होती। निश्चित और निरंतर परिवर्तन मानव समाज की विशेषता है। सामाजिक परिवर्तन का विरोध होता है क्योंकि समाज में रूढ़ीवादी तत्व प्राचीनता से ही चिपटे रहना पसंद करते है। स्त्रियों की शिक्षा स्वतंत्रता व समान अधिकार की भावना, स्त्रियों का आत्मनिर्भर होना, यौन शोषण पर रोक, भ्रूण हत्या की समाप्ति और ऐसे अनेक सामाजिक कुरूतियाँ है जिसमें परिवर्तन को आज भी समाज के कुछ तत्व स्वीकार नहीं कर पाते है।

शिक्षा ने समाज में फैले इन कुरूतियों के परिणाम को बताने का प्रयास किया है लोगों के बीच चेतना जागृत करने का प्रयास किया है। वही स्त्री शिक्षा परिवार की शिक्षा है जिस परिवार की स्त्री शिक्षित है उस परिवार की सोच, विचार, रहन-सहन सभी में बदलाव नजर आते है वे परिवार अपने रूढ़ीवादी विचारों को नकारते है और मानवीयता, नैतिकता और सामाजिक सहिसुन्नता के आधार पर सामाजिक संबंधो का निर्माण करता है। प्रत्येक कार्य के महत्व को समझते हुए उसे सम्पन्न करने का प्रयास करता है। समाज की जड़ता को समाप्त करने के शिक्षा तथा स्त्री शिक्षा की अतुलनीय योगदान है। इसी का परिणाम है कि आज समाज के वे परम्परागत कोढ़ जो समाज की स्वच्छ संरचना को समाप्त कर रहा था आज उन्नमूलन की अवस्था में है।

प्रमुख शब्दः- परिवर्तन, शिक्षा, स्त्रीशिक्षा, प्रासंगिकता, उन्मूलन

---------------------------♦---------------------------

प्रस्तावना:

समाज का शाश्वत नियम है परिवर्तन यह समाज के आन्तरिक तथा बाहरी या संरचनात्मक दोनो पक्षों में हो सकता है। किसी युग के आदर्शो एवं मूल्य में यदि पिछले युग के मुकाबले कुछ अन्तर या नयापन दिखाई पड़े तो उसे आन्तरिक परिवर्तन कहेगें और अगर किसी सामाजिक अंग जैसे परिवार, वर्ग, जातीय हैसियत समूहों के स्वरूपों, आधारों एवं व्यवहारों में परिवर्तन परिलक्षित हो तो उसे संरचनात्मक परिवर्तन कहेंगे। परिवर्तन या तो समाज के समस्त ढाँचे में आ सकता है अथवा समाज के किसी विशेष पक्ष तक सीमित हो सकता है। परिवर्तन एक सर्वकालिक घटना है। यह किसी न किसी रूप में हमेशा चलने वाली प्रक्रिया है।

सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया पर सिलसिलेबार ढ़ंग से चिंतन की शुरूआत 19वीं सदी के मध्य में हुई, जब विद्वानों ने यूरोपिय समाज में औद्योगिकीकरण और राजनैतिक क्षेत्र में प्रजातांत्रिक पद्धति की स्थापना से उत्पन्न विभिन्न प्रक्रियाओं को समझने का प्रयास किया जैसा कि गार्डन मार्शल ने बताया है।

समाज वैज्ञानिकों में सर्वप्रथम इस विषय की ओर ध्यान ब्रिटिश इतिहासकार हेनरी समनर मेन का गया, जिन्होंने अपनी पुस्तक एन्श्सेट लॉ (1861) में बताया कि समाज एक सरल व्यवस्था से जटिल व्यवस्था की ओर बढ़ता है। उनके समकालिन मानवशास्त्री एल.एच. मौगन का भी विचार वैसा ही था।

परिवर्तन समाज के आधारभूत संरचनाओं पर प्रकाश डालने वाला एक विस्तृत एवं कठिन विषय है। इस प्रक्रिया में समाज की संरचना एवं कार्य प्रणाली का एक नया जन्म होता है इसके अन्तर्गत मूलतः सामाजिक परिस्थिति, वर्ग, स्तर तथा व्यवहार के अनेकानेक प्रतिमान बनते एवं बिगड़ते है। समाज गतिशील है और समय के साथ परिवर्तन अवश्यंभावी है।

आधुनिक युग में प्रत्येक क्षेत्र में विकास हुआ है तथा विभिन्न समाजों ने अपने तरीकें से इन विकासों को समादित किया है, उनका उत्तर दिया है, जो कि सामाजिक परिवर्तनों में परिलसित होता है। इन परिवर्तनों की गति कभी तीव्र रही है कभी मन्द। कभी-कभी ये परिवर्तन अति महत्वपूर्ण रहे है तो कभी बिल्कुल महत्वहीन। कुछ परिवर्तन आकस्मिक होते है, सामाजिक परिवर्तन के अन्तर्गत हम मुख्य रूप से तीन तथ्यों का अध्ययन करते है।

1. सामाजिक संरचना में परिवर्तन
2. संस्कृति में परिवर्तन
3. परिवर्तन के कारक

परिवर्तन के लिए अनेक तथ्य व कारक जिम्मेदार होते है पर उनमें से कुछ महत्वपूर्ण तथ्य होते है जिसके आधार पर घटनाओं को स्पष्ट किया जा सके। अध्ययनकत्त्ता ने जनसंख्या वृद्धि दर के गिरावट तथा शिक्षा के दर में वृद्धि को आधार बनाकर सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा और स्त्रीशिक्षा को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

अध्ययन के उद्देश्यः-

1. सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका को स्पष्ट करना।
2. सामाजिक परिवर्तन में स्त्री शिक्षा की भूमिका को स्पष्ट करना।
3. शिक्षा तथा स्त्री शिक्षा की प्रासंगिकता को स्पष्ट करना।

1. शिक्षा समाज के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करती है चाहे वह सांस्कृतिक स्वरूप हो या राजनैतिक। शिक्षा का प्रारूप समाज के स्वरूप को बदल देती है क्योंकि शिक्षा परिवर्तन का साधन है। समाज प्राचीनकाल से आज तक निरंतर विकसित एवं परिवर्तित होता चला आ रहा है क्योंकि जैसे-जैसे शिक्षा का प्रचार-प्रसार होता गया इसने समाज में व्यक्तियों के परस्थिति, दृष्टिकोण, रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाजों पर असर डाला और इससे सम्पूर्ण समाज का स्वरूप बदला शिक्षा समाज के व्यक्तियों को इस योग्य बनाती है कि वह समाज में व्याप्त समस्याओं, कुरीतियों गलत परम्पराओं के प्रति सचेत होकर उसकी आलोचना करते है और धीर-धीरे समाज में परिवर्तन होता जाता है। शिक्षा समाज के प्रति लोगों को जागरूक बनाते हुए उसमें प्रगति का आधार बनाती है। शिक्षा पूर्व में कुछ लोगों तक ही सीमित थी जिससे समाज का स्वरूप अलग तरीके या रूढ़िवादी था भेदभाव अत्यधिक थे। कालान्तर में शिक्षा समाज के सभी वर्गो के लिए अनिवार्य बनी जिससे कि स्वतंत्रता के पश्चात् सामाजिक प्रगति एवं सुधार स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है। शिक्षा व्यक्ति के दृष्टिकोण व व्यवहार में परिवर्तन कर उसके क्रियाकलाप में परिवर्तन कर समूह मन का निर्माण करती है और इससे अव्यवस्था दूर कर उपयुक्त सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करती है।

शिक्षा व्यवस्था जहाँ समाज से प्रभावित होती है वहीं समाज को परिवर्तित भी करती है जैसे कि स्वतंत्रता के पश्चात् सबके लिए शिक्षा व समानता के लिए शिक्षा हमारे मुख्य लक्ष्य रहे है। इससे शिक्षा का प्रचार-प्रसार हुआ और समाज का पुराना ढांचा परिवर्तन होने लगा। आध्यात्मिक मूल्यों के स्थान पर भौतिक मूल्य अधिक लोकप्रिय हुआ। सादा जीवन उच्च विचार से अब हर वर्ग अपनी इच्छाओं के अनुरूप जीना चाहता है। शिक्षा ने जातिगत व लैगिंग असमानता को काफी हद तक दूर करने का प्रयास किया। ग्रामीण समाज अब शहरी समाजों के व्यवहारों की ओर उन्नमूख होने लगे है।

वैंकट रायप्पा ने शिक्षा और समाज के संबंध को स्पष्ट करते हुए लिखा है - ''शिक्षा समाज के बालाकों का सामाजीकरण करके उसकी सेवा करती है।[1] इसका उद्देश्य युवकों को सामाजिक मूल्यों विश्वासों और समाज के प्रतिमानों को आत्मसात करने के लिए तैयार करना और उनको समाज की क्रियाओं में भाग लेने के योग्य बनाना है। शिक्षा व्यक्ति व समाज के लिए कार्य करती है। शिक्षा द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है। व्यक्तित्व के विकास से तात्पर्य शारीरिक, चारित्रिक, नैतिक और बौद्धिक गुणों का विकास के साथ सामाजिक गुणों का विकास होता है विकसित व्यक्तित्व ही बाहुल्य समाज की प्रगति का आधार बनता है। शिक्षा समाज की संस्कृति एवं

सभ्यता के हस्तांतरण का आधार बनती है शिक्षा के इस कार्य के विषय में ओटवे ने लिखा है कि -शिक्षा का कार्य समाज के सांस्कृतिक मूल्यों और व्यवहार के प्रतिमानों को अपने तरूण और शक्तिशाली सदस्यों को प्रदान करना है। पर असल में यह उसके साधारण कार्यो में से एक है। शिक्षा के इस कार्य पर टायलर ने लिखा है कि संस्कृति वह जटिल समग्रता है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, प्रथा तथा अन्य योग्यतायें और आदतें सम्मिलित होती है।[2] जिनको मनुष्य समाज के सदस्य के रूप में शिक्षा से प्राप्त करता है। शिक्षा समाज की प्रगति का आधार है। शिक्षा समाज के लिए वह साधन है, जिसके द्वारा समाज के व्यक्तियों के विचारों, आदर्शों, आदतों और दृष्टिकोण में परिवर्तन कर समाज की प्रगति की जाती है। एलवुड ने स्पष्ट किया है शिक्षा वह साधन है जिससे समाज सब प्रकार की महत्वपूर्ण सामाजिक प्रगति की आशा कर सकता है। शिक्षा व्यक्ति के दृंष्टिकोण, विचारो तथा जीवन को सशक्त करने की एक अभिकत्र्ता की तरह कार्य करती है। जब शिक्षा द्वारा सामूहिक विचार परिवर्तित होते है तब सामाजिक परिवर्तन होता है। विज्ञान तथा तकनीकी का विकास शिक्षा द्वारा सामाजिक परिवर्तन का एक उदाहरण है। लोग शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक हो गए है। तथा शिक्षा ने बदले में समाज के लोगों में वैज्ञानिक प्रवृति का विकास किया है। शिक्षा जनसंख्या को संपर्क तथा शक्ति के रूप में परिवर्तित करने में तथा साथ-साथ इसके वृद्धि पर नियंत्रण के प्रयास में सहायता करती है। यद्यपि शिक्षा सभी लोगों के उच्च स्तर तथा स्थिति की सुनिश्चित नहीं करती है फिर भी बिना शिक्षा के व्यक्ति द्वारा सामाजिक गतिशीलता प्राप्त करना असंभव है। इसके अतिरिक्त शिक्षा अवसरों की समानता में तीन प्रकार से भूमिका निभाती है।

(1) जो व्यक्ति शिक्षित होने को इच्छुक है उन्हें सुविधाओं के लाभ लेने के योग्य बनाने के कार्य को संभव बनाना।

(2) शिक्षा की विषय वस्तु को विकसित करना जो वैज्ञानिक तथा वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण के विकास को प्रोन्नत करें।

(3) धर्म, भाषा, जाति, वर्ग, समुदाय, लिंग पर आधारित पारस्परिक सहिष्णुता का सामाजिक वातावरण के निर्माण द्वारा।

डासन और गैटिस ने ठीक ही लिखा है ''क्रिया और परिवर्तन सदैव उपस्थित सार्वभौम तथ्य है।[3] एक से जीवन से मानव उब जाता है। घनिष्ठ से घनिष्ठ प्रेममय सम्बंधों में भी कुछ न कुछ परिवर्तन की इच्छा मानव का स्वभाव है प्रसिद्ध मनोविश्लेषणवादी फ्राइड के अनुसार मनुष्य में परस्पर विरोधीभाव मौजूद रहते है। जहाँ प्रेम है वहाँ घृणा भी है। किसी भी देश का इतिहास कभी एक सा नहीं रहा, राज्य बनते बिगड़ते रहा है। नई विचार धाराएँ, अपनायी जाती है। पुरानी रूढ़िया और परम्पराए टूटती रहती है। परिवार विवाह, जाति, तथा सभी संस्थाओं मे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धर्म, राज्य-शिक्षा के आदर्शो स्त्री पुरूष के संबंधों में जीवन के सभी पदों में यह परिवर्तन देखा जा सकता है परिवर्तन की यह प्रक्रिया शिक्षा के कारण ही दृष्टिगोचर होते है।

शिक्षा से समाज में जागरूकता आती है जागरूकता से क्रान्ति से आती है और क्रान्ति से परिवर्तन आता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि शिक्षा समाज में बदलाव लाने का सबसे अच्छा माध्यम है।

विश्व के प्राचीन समाजों में से एक भारतीय समाज भी है। यहाँ के लोगों को भारतीय संस्कृति व परम्परा से गहरा लगाव है जिसके कारण वह अपनी धार्मिक पवित्रता को बनाये हुए है। लेकिन इन सबके बावजूद आज विश्व में पर्यावरण, जनसंख्या, औद्योगिकीकरण, नगरीकरण आदि ने समाज को परिवर्तित करने में अपनी अहम भूमिका निभाई है। सामाजिक परिवर्तन में भी इन कारकों का प्रभाव पड़ा है। आज पुराने व कमजोर पड़े रीति-रिवाजों को छोड़ हम आधुनिक व पश्चिमीकरण की संस्कृति को अपना रहे है। हम जातिवाद से उपर उठकर मानवतावाद की ओर बढ़ रहे है हमारे इस पुण्य कार्य में शिक्षा व संस्कृति दोनों अमूल्य है। शिक्षा ने आज समाज की व्यवस्था को सही दिशा देने में योगदान दिया है। आज शिक्षा के बल पर सामाजिक स्तर में परिवर्तन किया जा सकता है। सामाजिक परिवर्तन में अफ्रीका में डॉ. नेल्सन मंडेला 20 वर्ष तक जेल में रहने के पश्चात् समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर समाज में समानता, भाईचारा, अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का संदेश विश्व को दिया।

2. सामाजिक परिवर्तन में स्त्रीशिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है हमारे प्राचीन धर्मग्रंथों में उल्लेखित है कि –

''नास्ति विद्यासमं चक्षु नास्ति मातृ समोगुरूः

अर्थात् इस दुनिया में विद्या के समान क्षेत्र नहीं है और माता के समान गुरू नहीं है। यह बात पूरी तरह सच है। बालक के विकास पर प्रथम और सबसे अधिक प्रभाव उसकी माता का ही पड़ता है। माता ही अपने बच्चे को पाठ पढ़ाती है। बालक का यह प्रारंभिक ज्ञान पत्थर पर बनी अमिर लकीर के समान जीवन का स्थायी आधार जाता है लेकिन आज पूरे भारत वर्ष में इतने असामाजिक तत्व उभर आए है,

जिन्होंने माँ-बहनों का रिश्ता खत्म कर दिया है और जो भोग-विलास की जिंदगी जीना अधिक उपयोगी समझने लगें है। यही कारण है कि समाज आज संक्रमण की दौर से गुजर रहा है। स्त्रीशिक्षा समाज को नई दिशा प्रदान करती है। जिस प्रकार शरीर को भोजन की आवश्यकता होती है उसी प्रकार मानसिक विकास व सामाजिक विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है। अगर स्त्री शिक्षित नहीं होगी तो वह न तो सफल गृहिणी बन सकेगी और न कुशल माता अगर एक माँ ही अशिक्षित होगी तो वह अपने बच्चो का सही मार्गदर्शन करके उनका मानसिक विकास कैसे कर पायेगी और एक स्वस्थ्य समाज का निर्माण एवं विकास सम्भव नहीं हो सकेगा। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षित स्त्री ही भविष्य में निराशा एवं शोषण के अंधकार से निकलकर परिवार को सही राह दिखा सकती है। अगर हम महिलाओं की आज की अवस्था को पौराणिक समाज की स्थिति से तुलना करे तो यह साफ दिखाई देता है कि हालात में कुछ सुधार हुआ है महिलाएँ नौकरी करने लगी है। घर के खर्चो में योगदान देने लगी है। कई क्षेत्रों में तो पुरूषों से आगे निकल गई है। दिन प्रतिदिन लड़कियाँ ऐसे-ऐसे कीर्तिमान बना रही है जिस पर न सिर्फ परिवार या समाज को बल्कि पूरा देश गर्व महसूस कर रहा है। स्त्री शिक्षा का ही प्रतिफल है कि समाज व सरकार की सोच बदली है स्त्रियों के उत्थान में सरकार भी पीछे नही है सरकार ने पुराने वक्त के प्रचलनों को बंद करने के साथ-साथ उन पर कानून रोक लगा दी है जिनमें मुख्य थे बाल-विवाह, भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, बाल मजदूरी, घरेलू हिंसा आदि। इन सभी को कानूनी रूप से प्रतिबंध लगाने के बाद समाज में स्त्रियों की स्थिति में काफी सुधार आया है। स्त्री अपनी पूरी जिन्दगी अलग-अलग रिश्तों में खुद को बाँधकर दूसरो की भलाई व सामाजिक बुराई को दूर करने के लिए काम करती है। किसी भी समाज एवं राष्ट्र की प्रगति में स्त्री शक्ति का विशेष महत्व है। स्त्री मानव जाति की जननी और दो पीढ़ियों को जोड़ने वाली एक कड़ी है। स्त्री जीवन का स्रोत है। स्त्री शक्ति धन और ज्ञान की प्रतीक मानी गयी है। स्त्रियों को प्रत्येक सामाजिक संगठन का आधार और स्रोत माना जाता है। इनकी स्थिति पर ही समाज का संगठन और विघटन निर्भर करता है। जिस समाज में स्त्रियों की स्थिति उच्च और सम्माननीय होती है, उस समाज को प्रगतिशील माना जाता है। यही नहीं स्त्रियाँ समाजीकरण और व्यक्तित्व के विकास में अपूर्व योगदान करती है। इसी परिपेक्ष्य में स्त्री शिक्षा इनको सुसंस्कृत एवं सुसभ्य बनाने में अनुपम योगदान प्रदान कर सकती है। सुशिक्षित स्त्री ही बच्चों के समाजीकरण एवं आदर्शोन्मुखता की आधार होती है।

शिक्षा को व्यक्तित्व विकास एवं सामाजिक परिवर्तन के आवश्यक उपकरण के रूप में प्राचीन काल से ही अपनाया जाता रहा है। शिक्षा मानव जीवन का एक सुसंस्कृत एवं महत्वपूर्ण पक्ष है। इसके द्वारा मानव अपना आर्थिक व सामाजिक विकास करता है एवं जीवन में पूर्णता प्राप्त करने का प्रयास करता है। शिक्षा के द्वारा ही वह आचार-विचार, रहन-सहन में परिवर्तन एवं परिमार्जन करता है तथा इसके द्वारा सामाजिक सांस्कृतिक एवं अध्यात्मिक उन्नति होती है। प्रमुख दार्शनिक लॉक का कहना है कि पौधे का विकास कृषि के द्वारा तथा मनुष्य का विकास शिक्षा के द्वारा होता है।

विश्व की विभिन्न संस्कृतियों के निर्माण में स्त्री का योगदान महत्वपूर्ण रहा है तथा सभी यूगो में किसी भी राष्ट्र की संस्कृति का मुख्य मापदण्ड भी स्त्री की स्थिति ही रही है। वर्तमान समय में स्त्री की स्थिति में क्रान्तिकारी सुधार हुआ है। शिक्षा की प्रसार से स्त्रियों की शैक्षिक स्थिति और सामाजिक स्थिति को बदलकर रख दिया है। स्त्रियाँ सार्वजनिक चुनाव में निर्वाचित होकर विधायक, सांसद, मंत्री और प्रधानमंत्री होने लगी है तो दूसरी ओर उच्च शिक्षा प्राप्त कर देश के सभी जिम्मेदार पदो पर कार्य कर रही है जैसे - डॉक्टर, इन्जीनियर, वकील, शिक्षिका, लिपिक, प्रशासनिक अधिकारी, पायलट, वैज्ञानिक, आदि जो समाज के सोच, व्यवहार व दृष्टिकोण को बदलकर सामाजिक परिवर्तनके लिए एक दिशा तय किया है।

3. आजादी के लगभग 6 दशक के बाद भी समाज संक्रमण दौर से गुजर रहा है। तुलनात्मक रूप से हम काल क्रमेल अध्ययन करे तो हमें यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा तथ स्त्री शिक्षा के वृद्धि के परिणाम स्वरूप समाज के सोच विचार व्यवहार दृष्टिकोण में बदलाव आया है। रूढ़ीवादी सोच में कमी आयी है पर आज भी यदा-कदा ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पीड़न की घटना घट ही जाती है शिक्षा तथा स्त्रीशिक्षा ने स्त्रियों में आत्मविश्वास को बढ़ाया है तो वहीं सामाजिक छुआछुत परम्परागत सोच आदि को बदलने में कामयाव हुआ है। विश्व तकनीकी युग में प्रवेश कर रहा है जरूरत है हमें भी विकास के लिए उसके साथ कदम से कदम मिलाकर चले। इसके लिए हमें परम्परागत व्यवस्था तथा सोच से बाहर आना होगा और आधुनिक व्यवस्था व सामाजिक संरचना को स्वीकार करना होगा। इस कार्य में शिक्षा तथा स्त्री शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। तथा देश को विकसित बनाने में अपना योगदान दे सकती है। हमारी परम्परावादी सोच का ही परिणाम था जन्म दर में वृद्धि पुत्र की लालासा में अत्यधिक संतान पैदा करना पर शिक्षा और स्त्रीशिक्षा ने इस वृद्धि दर पर अंकुश लगा दिया है जो इसकी प्रासंगिकता की पुष्टि करता है और शोधकत्र्ता ने इसी को आधार बनाकर सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा और स्त्रीशिक्षा की भूमिका को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

शिक्षा तथा स्त्रीशिक्षा की दशकीय वृद्धि ने किस प्रकार महिलाओं की सोच व सामाजिक सोच को परिवर्तित कर समाज को पोषण प्रदान किया है तथा जनसंख्या वृद्धि दर को कम किया है उसको हम निम्न आकड़ो के माध्यम से स्पष्ट कर सकते है।

वर्ष	भारत की साक्षरता दर	महिला साक्षरता दर	दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर	दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर में परिवर्तन
1901	5.35%	0.60%		
1911	5.92%	1.05%	5.75	
1921	7.16%	1.81%	0.31	- 6.05
1931	9.50%	2.93%	11.10	11.31
1941	16.10%	7.30%	14.22	3.22
1951	16.67%	7.93%	13.31	-0.91
1961	24.02%	12.95%	21.64%	8.33
1971	29.45%	18.69%	84.80%	3.16
1981	36.23%	24.82%	24.66%	-0.14
1991	42.84%	32.17%	23.96%	-0.80
2001	64.83%	53.67%	21.31%	-2.52
2011	74.04%	65.46%	17.69%	-3.62

आकड़ो का विश्लेषण

1901 – 1921 - स्थिर जनसंख्या

1921 – 1951 - धीमी वृद्धि

1951 – 1981 - तीव्र एवं उच्च वृद्धि

1981 – 2011 - उतराव के संकेत वृद्धि के साथ दशकीय वृद्धि में कमी।

निष्कर्ष:-

उपरोक्त तथ्यों एवं आकड़ो के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि जैसे-जैसे शिक्षा और स्त्री शिक्षा की दशकीय दर में वृद्धि हुई वैसे -वैसे जनसंख्या के दशकीय वृद्धि अनुपात के कमी आई है। इस आधार पर हम कह सकते है कि प्रारंभिक समाज परम्परागत समाज था जहाँ शिक्षा और स्त्री शिक्षा का घोर अभाव था समाज पूर्ण रूप से ईश्वरवादी था यानि सभी गतिविधि ईश्वर की इच्छा मान कर करते थे। सामाजिक व्यवस्था का संचालन में धर्म का अधिक बोल बाला था समाज को परिवर्तन स्वीकार नहीं थी पर जैसे-जैसे हमारी शिक्षा के स्तर में वृद्धि हुआ हमारी सोच, व्यवहार व दृष्टिकोण भी बदलने लगे, हम परिवर्तन को स्वीकार करने लगे और सामाजिक व्यवस्था बदलने लगी। लोग भाग्यवादी न होकर अब तार्किक रूप से निर्भय लेने लगे। परिमाण स्वरूप समाज में गुणात्मक रूप से अन्तर दिखाई देने लगा। लोगों के आदर्श बदल गये, जीवन-यापन के तरीके बदल गये, शिक्षा का महत्व बढ़ गया। महिलाओं की स्थिति बदल गयी। रूढ़ीवादी व संकीर्ण सोच में बदलाव आया और लोग आधुनिक तथ्यों को स्वीकार करने लगे।

इस प्रकार हम यह कह सकते है कि सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा और स्त्री शिक्षा का महत्वपूर्ण योग्यदान है और इस दिशा में अग्रेतर और भी कार्य किया जा सकता है जिससे स्वच्छ व कल्याणकारी भारत का निर्माण हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. मित्तल एम. एल (2008) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक इन्टरनेशनल पब्लिकेशन हाउस मेरठ।

2. सक्सेन (डॉ.) सरोज, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, साहित्य प्रकाशन आगरा।

3. एलैक्स (डॉ.) शीलू मैरी (2008) शिक्षा के सामाजिक एवं दार्शनिक परिपेक्ष्य रजत प्रकाशन, नई दिल्ली।

4. सिंह (डॉ.) जे. पी. सामाजिक परिवर्तन: स्वरूप एवं सिद्धांत प्रेंटिस हॉल ऑफ़ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली।

5. द्विवेदी आचार्य हजारी प्रसाद स्वतंत्रता और संस्कृति।

6. त्यागी गुरसरनदास-भारत में शिक्षा का विकास।

Corresponding Author

Priya Ranjan*

Research Scholar, Sociology, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur